International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

महर्षि अरविंद का शिक्षा दर्शन

Education Philosophy of Maharshi Arbindo

Dr. Raghvendra Dixit

सहायक प्रोफेसर
महाराणा प्रताप शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय बसेड़ी

Abstract

महर्षि अरविन्द का शिक्षादर्शन लक्ष्य की दृष्टि से आदर्शवादी, उपागम की दृष्टि से यथार्थवादी, क्रिया की दृष्टि से प्रयोजनवादी तथा महत्वकाँक्षा की दृष्टि से मानवतावादी है।

–श्री बी0 बार० तनेजा

भारतभूमि पर सदैव महान आत्माओं ने जन्म लिया है। उन्हीं में से एक आत्मा है, महर्षि श्री अरविन्द, कभी–कभी ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे आध्यात्मिक देश भारत में समय की माँग एवं जरूरत के अनुकूल दिव्य विभूतियाँ अवतरित होती रही हैं और दिव्य आत्माओं के अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही भारत अपने अस्तित्व को कायम रख पाया है। इन लोगों के ज्ञान के प्रकाश के फलस्वरूप ही भारत स्वयं के अपने आध्यात्मिक मूल्यों पर टिका हुआ रख पाया है। श्री अरविन्द ने भारतीय आध्यात्मवाद पर पाश्चात्य भौतिकवाद के बढ़ते हुए प्रभाव के प्रति चिन्ता व्यक्त की और इस प्रभाव को सन्तुलित करके बहुत सारी समस्याओं का समाधान किया।

महर्षि अरविन्द ने भारतीय शिक्षा चिन्तन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, उन्होंने सर्वप्रथम घोषणा की कि मानव सांसारिक जीवन में भी दैवी शक्ति प्राप्त कर सकता है। उनका यह मानना था कि मानव भौतिक जीवन व्यतीत करते हुए अपने मानस को "अतिमानस" (Supermind) तथा स्वयं को "अतिमानव" (Superman) में परिवर्तित कर सकता है और यह शिक्षा के द्वारा पूर्णतः संभव है।श्री अरविन्द के अनुसार–**"शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य विकासशील आत्मा के सर्वांगीण विकास में सहायक होना तथा उसे उच्च आदर्शों के लिए प्रयोग हेतु सक्षम बनाना है।"**

"महर्षि अरविन्द सच्ची शिक्षा उसे मानते थे, जो मनुष्य की अर्त्तानिहित शक्तियों का विकास कर सके। शिक्षा को उन्होंने मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता मानते हुए शिक्षा का उद्देश्य शरीर के समस्त अंगों का सामजस्य पूर्ण विकास मानते थे उनका मानना था कि धार्मिक व योग की शिक्षा महत्वपूर्ण है। आज अरविन्द के शिक्षादर्शन की सर्वाधिक प्रासंगिकता है।

शब्दकुंजी: महर्षि अरविन्द, षिक्षादर्षन, सूचनात्मक ज्ञान, पाठ्यक्रम, षिक्षक, अतिमानव, अतिमानस, पथप्रदर्षक।

शिक्षादर्शन की अवधारणा:– (Concept of education philosophy)

दर्शन तथा शिक्षा की अलग–अलग व्याख्या करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि दोनों का लक्ष्य व्यक्ति को सत्य का ज्ञान कराना तथा उसके जीवन को विकसित करना है। ऐसी दशा में यह कहना उचित ही होगा कि दर्शन तथा शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध ही नहीं है अपितु दोनों एक दूसरे पर आश्रित भी हैं।

एक सच्चा दार्शनिक वही कहलाता है जो ज्ञानी हो और यह ज्ञान शिक्षा द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। इसप्रकार दर्शन एवं शिक्षा के मध्य गहन सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध में **जेन्टाइल** ने कहा है कि–**"शिक्षा दर्शन की सहायता के बिना सही मार्ग पर नहीं बढ़ सकती है। शिक्षा की समग्र समस्याओं का समाधान कराना और उसको क्रियान्वित करना दर्शन का कार्य है तथा दर्शन प्रवृत्तियों, समस्याओं एवं विचारों को कार्यरूप में परिणित करने का कार्य शिक्षा है।"** कतिपय दार्शनिकों के अनुसार शिक्षा एवं दर्शन एक आत्मा व दो शरीर हैं।

मानव जीवन में दो प्रकार से ज्ञान प्राप्त करता है, एक आत्म या स्वशिक्षा से अर्थात् निजी अनुभवों का लाभ उठाकर द्वितीय दूसरे के द्वारा दी गई शिक्षा से, उपदेश एवं शिक्षण प्रक्रिया से । ज्ञानप्राप्ति की इन दोनों स्थितियों में किसी न किसी उत्तेजक का होना आवश्यक है। प्रथम स्थिति की शिक्षा से मनुष्य **"अभिमत"** का निर्माण करता है दूसरे प्रकार की शिखा से मनुष्य **'ज्ञान'** प्राप्त करता है। अभिमत निर्माण एवं ज्ञानप्राप्ति दोनों एक ही वस्तु के दो पक्ष हैं। दूसरे को **अपने वस्तु अनुभव** के आधार पर ज्ञान देते समय अथवा उपदेश अथवा अभिमत व्यक्त करते समय मनुष्य अपने विचारों को सुसम्पादित रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। इस प्रकार की क्रिया से मनुष्य शिक्षक की स्थिति प्राप्त कर लेता है। उसकी विचारधारा आयोजन एवं सम्पादन शिक्षण कला के आधार होती हैं, इन्हीं आधारों को सामान्य शब्दों में शिक्षा दर्शन की संज्ञा दी जाती है। सामान्य रूप में शिक्षा दर्शन, दर्शन की वह शाखा है, जिसमें दार्शनिक

सिद्धान्तों का विवेचन शिक्षा के सन्दर्भ में किया जाता है, शिक्षा से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार करना और उनका समाधान दार्शनिक दृष्टि से प्रस्तुत करना ही शिक्षा दर्शन है।

स्पष्ट है कि शिक्षा की समुचित व्यवस्था के सिद्धान्तों को स्पष्ट करने वाला शास्त्र ही शिक्षा दर्शन है। इसके अन्तर्गत यह स्पष्ट किया जाता है कि शिक्षा का क्या उद्देश्य होना चाहिए ? पाठ्यक्रम का क्या स्वरूप होना चाहिए ? कक्षा में किस प्रकार का अनुशासन स्थापित होना चाहिए ? किस प्रकार की शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाना चाहिए ? शिक्षक, शिक्षार्थी एवं विद्यालय में किस प्रकार सम्बन्ध होना चाहिए।

महर्षि अरविन्द का शिक्षा दर्शनः–(Education philosophy of Maharshi arbindo)

महर्षि अरविन्द सच्ची शिक्षा उसी को मानते थे, जो मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास कर सके। शिक्षा को मनुष्य की अनिवार्य आवश्यकता मानते हुए उन्होंने शिक्षा का उद्देश्य शरीर के समस्त अंगों का सामजस्यपूर्ण विकास माना है। मन को शिक्षित करने के उनके चार प्रमुख स्तर थे–**चित्त**, **मानस, बुद्धि** और **चरम** विवेक। बालक के पाठक्रम में उन्होंने महानचरित्रों के नैतिक आदर्षो के साथ–साथ धार्मिक व योग विषय को प्रमुखता दी, उन्होंने ज्यामितीय, न्यायषास्त्र, अर्थविज्ञान तथा राजनीति, दर्षन के साथ ही, राष्ट्रीयता, अन्तर्राष्ट्रीयता, नारी षिक्षा, तकनीकी षिक्षा को भी महत्व दिया उनका मनना था कि षिक्षक की भूमिका उपदेषक की नहीं, निर्देषक की होनी चाहिए साथ ही श्रेष्ठ चारित्रिक गुणों के साथ–साथ उसे मनौविज्ञान का ज्ञाता भी होना चाहिए। विद्यार्थियों में ब्रह्मचर्य, अनुशासन, शिक्षकों के प्रति आदर भाव व मानवतावादी चरित्र को उन्होनें अनिवार्य माना, अनुशासन सम्बन्धी उनके विचार आदर्शवादी हैं। विद्यालय भौतिक तथा आध्यात्मिक विकास का केन्द्र हो ऐसा उनका मानना था।

श्री अरविन्द के दर्शन का लक्ष्य "उदात्त सत्य का ज्ञान" (Realization of the sublime Truth) है जो "समग्र जीवन दृष्टि" (Integral view of life) द्वारा प्राप्त होता है। समग्र जीवन दृष्टि मानव के ब्रह्म में लीन या एकाकार होने पर विकसित होती है, ईश्वर के प्रतिपूर्ण समर्पण द्वारा मानव 'अतिमानव' (Superman) बन जाता है अर्थात् वह सत, रज, तम् की प्रवृत्ति से ऊपर उठकर ज्ञानी बन जाता है। अतिमानव की स्थिति में व्यक्ति सभी प्राणियों को अपना ही रूप समझता है। जब व्यक्ति, मानसिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से एकाकार हो जाता है तो उसमें दैवी शक्ति (Devine Power) का प्रादुर्भाव होता है। समग्र जीवन दृष्टि हेतु अरविन्द ने योग पर अधिक बल दिया है। योग द्वारा मानसिक शान्ति एवं संतोष प्राप्त होता है। अरविन्द की दृष्टि में योग का अर्थ जीवन को त्यागना नहीं बल्कि देवीय शक्ति पर विश्वास रखते हुए जीवन की समस्याओं एवं चुनौतियों का साहस से सामना करना है। अरविन्द की दृष्टि में योग कठिन आसन व प्राणायाम करना भी नहीं है बल्कि ईश्वर के प्रति निष्काम भाव से आत्म समर्पण करना तथा मानसिक शिक्षा द्वारा स्वयं को दैवी स्वरूप में परिणित करना है।

अरविन्द ने मस्तिष्क की धारणा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि मस्तिष्क के विचारस्तर, चित्त, मनस, बुद्धि तथा अन्तर्ज्ञान होते हैं जिनका क्रमशः विकास होता है, अन्तर्ज्ञान में व्यक्ति को अज्ञान के संदेश प्राप्त होते हैं जो ब्रह्मज्ञान के आरम्भ की परिचायक है। अरविन्द ने अन्तर्ज्ञान को अधिक महत्व दिया है,अन्तर्ज्ञान द्वारा ही मानवता प्रगति की वर्तमान दशा को पहुँची है। अतः महर्षि अरविन्द का आग्रह है कि शिक्षक को अपने शिष्य की प्रतिभा का नैत्यिक–कार्य (Routine work) द्वारा दमन नहीं करना चाहिए। वर्तमान शिक्षापद्धति से अरविन्द का असंतोष इसी कारण था कि उनमें विद्यार्थियों की प्रतिभा के विकास का अवसर नहीं दिया जाता। शिक्षक को मनौवैज्ञानिक दृष्टि से विद्यार्थियों की प्रतिभा के विकास हेतु उनके प्रति उदार दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

अरविन्द के मस्तिष्क की धारणा की परिणति 'अतिमानस' (Super mind) की कल्पना व उसके अस्तित्व में है। अतिमानस चेतना का उच्चस्तर है तथा दैवी आत्मशक्ति का रूप है। अतिमानस की स्थिति तक धीरे–धीरे पहुँचना ही शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। उनके अनुसार भारतीय प्रतिभा की तीन विशेषता है–आत्मज्ञान (Spirituality), सृजनात्मकता (Creativity) तथा बुद्धिमत्ता (Intellectuality) महर्षि अरविन्द ने देशवासियों में इन्ही प्राचीन आध्यात्मिक शक्तियों के विकास करने का संदेश देकर भारतीय पुनर्जागरण करने का प्रयास किया है। अरविन्द के शब्दों में– **"भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान जैसी उत्कृष्ट उपलब्धि बगैर उच्च कोटि के अनुशासन के अभाव में संभव नहीं हो सकती जिसमें कि आत्मा व मस्तिष्क की पूर्ण शिक्षा निहित है।"** शिक्षा की अवधारणा को अरविन्द ने संकुचित दायरे में नहीं बाधा उनका मानना था कि शिक्षा सिर्फ सूचनाओं का एकत्रीकरण नहीं है–"सूचनाएँ ज्ञान की नीवें नहीं हो सकती हैं वह अधिक से अपने को ज्ञान देने तक सीमित रखती है वह शिक्षा नहीं है। उनका मानना है कि सच्ची एवं जीवित शिक्षा वह है जिसके द्वारा बच्चे की छिपी हुई शक्तियों का विकास होता है और उसे जीवन, मस्तिष्क, राष्ट्र की आत्मा एवं मानवता की आत्मा और मस्तिष्क से उचित सम्बन्ध जोड़ने में सहयोग प्राप्त होता है। वास्तविक शिक्षा व्यक्ति के मस्तिष्क, आत्मा, विवेक तथा बुद्धि को उचित मार्ग प्रदर्शन करती है प्रशिक्षित करती है तथा विकसित करती है।"

प्रत्येक दार्शनिक अन्ततः एक शिक्षाविद् होता है क्योंकि शिक्षा दर्शन का गयात्मक पक्ष है इसलिए अरविन्द के दर्शन की चरम परिणति उनके शिक्षा दर्शन में होती है महर्षि अरविन्द वर्तमान शिक्षापद्धति से असंतुष्ट थे उनका मानना था कि–

"सूचनात्मक ज्ञान कुशाग्र बुद्धि का आधार नहीं हो सकता।" (Information can not be the foundation of intelligence) इस प्रकार का ज्ञान तो नवीन अनुसंधान तथा भावी क्रियाकलापों का आरम्भ मात्र होता है।श अरविन्द आज की शिक्षापद्धति में भारतीय

प्रतिभा की तीन विशेषताओं आध्यात्मिकता, सृजनात्मकता तथा बुद्धिमत्ता का ह्रास एवं पतन देखते थे और इस पतन का कारण वे रुग्ण आध्यात्मिकता (Diseased spirituality) मानते थे।

महर्षि अरविन्द इस प्रकार की शिक्षापद्धति अपनाना चाहते थे। जो विद्यार्थियों के ज्ञानक्षेत्र का विस्तार करे साथ ही विद्यार्थियों की स्मृति, निर्णयन शक्ति एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करे तथा जिसका माध्यम मातृभाषा हो चूँकि महर्षि अरविन्द राष्ट्रवादी थे। अतः उनके विचार भी इसी राष्ट्रीयता के ओत–प्रोत थे इसलिए वे भारतीय शिक्षापद्धति को भारतीय परम्परा के अनुसार ढालना चाहते थे। उन्होंने शिक्षा के द्वारा पुनर्जागरण का संदेश दिया था। यह पुनर्जागरण तीन दिशाओं की ओर उन्मुख होना चाहिए।

(1) प्राचीन आध्यात्म ज्ञान की पुनर्स्थापना,

(2) आध्यात्मक ज्ञान का दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान व विवेचनात्मक ज्ञान का प्रयोग, तथा

(3) वर्तमान में समस्याओं का भारतीय आत्मज्ञान की दृष्टि से समाधान की खोज तथा आध्यात्म प्रधान समाज की स्थापना, इस प्रकार श्री अरविन्द के दर्शन की चरम परिणति उनके शैक्षिक दर्शन में होती है।

शिक्षा का पाठ्यक्रमः–(Curriculum of education)

महर्षि अरविन्द द्वारा प्रतिपादित सम्पूर्ण विकास के अनेक पहलू हैं और इन पहलुओं से सम्बन्धित सब प्रकार के विषयों का पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान होना चाहिए। वे बालकों के मन पर बहुत अधिक बोझ लादने के पक्ष में नहीं थे इसलिए अरविन्द चाहते थे कि अनेक विषयों का सतही ज्ञान कराने की अपेक्षा विद्यार्थियों को कुछ चयनित विषयों का ही गहन अध्ययन किया जाय, वह पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक विषयों को निहित करने के साथ–साथ वे साहित्यिक, वैज्ञानिक, इतिहास एवं संस्कृति के महत्व को अस्वीकार नहीं करते थे। वे यह भी चाहते थे कि इन विषयों का गहन अध्ययन छात्रों को कराया जाना चाहिए। साथ ही पाठ्यक्रम को अधिक से अधिक रोचक बनाने का प्रयास ही किया जाना चाहिए। मस्तिष्क को प्रधानता देने के कारण अरविन्द पाठ्यक्रम में मनौविज्ञान विषय को सम्मिलित करना चाहते थे जिसमें कि "समग्र जीवन दृष्टि" विकसित हो सके। इसी उद्देश्य से वे पाठ्यक्रम में दर्शन एवं तर्कशास्त्र को भी स्थान देते थे।

महर्षि अरविन्द बालक के बौद्धिक विकास के साथ–साथ उसका नैतिक एवं धार्मिक विकास भी करना चाहते थे। उनका मानना था कि–"मानव की मानसिक प्रवृत्ति नैतिक प्रवृत्ति पर आधारित है ऐसी बौद्धिक शिक्षा, जो नैतिक एवं भावनात्मक प्रगति से रहित हो, मानव के लिए हानिकारक है।"नैतिक शिक्षा हेतु अरविन्द गुरु की प्राचीन भारतीय परम्परा के पक्षधर थे जिसमें गुरु शिष्य का मित्र, पथप्रदर्शक तथा सहायक हो सकता था। अनुशासन द्वारा ही विद्यार्थियों में अच्छी आदतों का निर्माण हो सकता है।

शिक्षा के लक्ष्यः– (Goals of Curriculum)

अरविन्द के अनुसार–**"शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य विकासशील आत्मा के सर्वांगीण विकास में सहायक होना तथा उसे उच्च आदर्शों के लिए प्रयोग हेतु सक्षम बनाना है।"**

महर्षि अरविन्द के विचार महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के लक्ष्यों के समान ही हैं। अरविन्द की धारणा थी कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति में यह विश्वास जागृत करना है कि मानसिक तथा आत्मिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम है तथा वह धीरे–धीरे 'अतिमानव' (Superman) की स्थिति में आ रहा है। शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति की अन्तर्निहित बौद्धिक एवं नैतिक क्षमताओं का सर्वोच्च विकास होना चाहिए। अरविन्द का विश्वास था कि मानव दैवी शक्ति से समन्वित है और शिक्षा का लक्ष्य इस चेतना शक्ति का विकास करना है, इसलिए वे मस्तिष्क को छठी ज्ञानेन्द्रिय मानते थे। उनका मानना था कि शिक्षा का लक्ष्य इन छः ज्ञानेन्द्रियों का सदुपयोग करना सिखाना चाहिए। अरविन्द ने कहा था कि–**"मस्तिष्क की उच्चतम सीमा तक पूर्ण प्रशिक्षण होना चाहिए अन्यथा बालक अपूर्ण तथा एकांकी रह जायेगा। अतः शिक्षा का लक्ष्य मानव व्यक्तित्वके समेकित विकास हेतु अतिमानस (Suptermind) का उपयोग करना है।"**

शिक्षक एवं शिक्षण–विधिः– (Teacher and teaching method)

महर्षि अरविन्द ने शिक्षक के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है–"शिक्षक प्रशिक्षक नहीं है, वह तो सहायक एवं पथप्रदर्शक करने की दिशा भी दिखलाता है। शिक्षण पद्धति की उत्कृष्टता उपयुक्त शिक्षक पर ही निर्भर होती है।"

अरविन्द शिक्षक को ज्ञान देने का माध्यम मानने के साथ–साथ उसे एक पथप्रदर्शक एवं सहायक के रूप में भी मानते हैं। अरविन्द के अनुसार शिक्षण एक विज्ञान है जिसके द्वारा विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन होता है।

निष्कर्षः– (Conclusion)

महर्षि अरविंद का शिक्षादर्शन समग्र जीवन दृष्टि से जुड़ा हुआ है उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से मजबूत बनाना है और उनका यह मानना था कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अतिमानव की स्थिति में पहुंच सकता है शिक्षा के द्वारा व्यक्ति को योग्य एवं कर्मठ नागरिक बनाया जाना चाहिए और शिक्षा मातृभाषा में ही प्रदान करनी चाहिए और श्री अरविंद जी का यहां

भी मानना था कि शिक्षा से व्यक्ति की नैतिक एवं बौद्धिक क्षमताओं का विकास होना चाहिए साथ ही एक शिक्षक को पद प्रदर्शक एवं सहायक के रूप में होना चाहिए महर्षि अरविंद के शिक्षा दर्शन का उद्देश्य व्यक्ति को पूर्ण ज्ञान और समग्र विकास की ओर ले जाना है।

सुझावः– (Suggestions)

1- स्कूलों का वातावरण प्राचीन गुरुकुलो जैसा सात्विक बनाने का प्रयास किया जाए जिससे नैतिक शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा, योग एवं शारीरिक शिक्षा का समावेश हो।

2- राष्ट्रीय शिक्षानीति, भारत की सांस्कृतिक, भौगोलिक विमिन्नताओं को ध्यान में रखकर, तैयार की जाए और इसे तैयार करने में राज्यों की राय भी शामिल की जाए और राष्ट्रीय शिक्षा ऐसी हो जो बच्चों के बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं शारीरिक विकास में सहायक हो।

संदर्भ सूची

1- श्री अरविंद मेरी दृष्टि में (गूगल, पुस्तक लेखक – रामधारी सिंह दिनकर)
2- श्री अरविंदो पर निबंध – विनोद हरिदास
3- शिक्षा के सिद्धांत – डॉ सरोज सक्सेना
4- शिक्षा दर्शन – डॉ राम सकल पाण्डेय
5- भारतीय दर्शन – उमेश मिश्रा
6- भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक – आत्मानंद मिश्र
7- दर्शन और शिक्षा – सूर्य प्रसाद चौबे
8- https://www.wikipedia.org
9- https://www.google.com